रात्रि क्लास 6-8-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

बहुत सहज भी है समझने का। विश्व में शान्ति पर कितना समझा के लिखवाया है। अगर संगम पर खड़े रहे, क्योंकि मनुष्यों को यह पता नहीं है कि यह संगम युग है। संगम पर खड़ा रहे तो देखा जायेमुक्ति-जीवन मुक्ति, गति-सदगति सिवाय बाप के कोई दे न सके। बाप ही कहते हैं मैं तुम बच्चों को गति सदगति अर्थात सुख और शान्ति देता हूं। एक तरफ है शान्ति और सुख। दूसरे तरफ है अशान्ति और दुःख। यह भी बाप समझाते हैं मैं भारत वासी बच्चों को शान्ति देने आया हूं। विश्व में शांति भी तो सुख भी। गति और सदगति। मुक्ति और जीवन मुक्ति। अभी यह समझाना तो बहुत ही सहज है। बाप खुद कहते हैं मैं हूं नई दुनिया की स्थापना करने वाला। क्रिश्चन भी कहते हैं 3000वर्ष पहले पैराडाईज़ था। भारत में था ऐसे भी नहींकहते हैं। राजाई थी। अभी तो उन्हों को राजाई से नफरत आती है। तो शायद डीटी राजधानी से देह धरकती है। पंचायती राज्य उन्हों को मीठा लगता है। बाप कहते हैं भारत का धर्म बहुत ही सुख देने वाला था। पैराडाईज़ था। बिचारों को पता ही नहीं है। अभी बाप समझाते हैं भारतवासी बच्चों में ही तुमको शांति और सुख देता हूं। नई दुनिया में शान्ति भी थी तो सुख भी था। यह है संगम। संगम पर ब्रह्मा सरस्वती बैठे हैं। वह फिर ल०ना० बनते हैं। ल०ना० फिर 84 का चक्र खाकर ब्रह्मा सरस्वती बनते हैं। अभी बाप खुद कहते हैं इनके बहुत जन्मों के अन्त में मैं ने प्रवेश किया है। और मैंने नाम ब्रह्मा रखा है। सन्यासी भी नाम बदलते हैं ना। बाप खुद कहते हैं मैं यह वरसादेने आया हूं। भारत स्वर्ग था तो बाकी सभी शांति धाम में थे। हम ब्रह्मा द्वारा अभी तुमको शांतिधाम और सुखधाम का मालिक बनाता हूं। और क्या चाहिए तुमको। सम्मुख कहते हैं मैं तुम भारतवासियों को सुखधाम का मालिक बनाता हूं। और सभी को शांति धाम का बनाता हूं। और क्या चाहिए। शांति और सुख और तो कोई चीज़ दुनिया में है नहीं। बाप कहते हैं मैं तुम भारतवासियों को शांति का वरसा और विश्व की बादशाही देता हूं। वहां कोई भी प्रकार का दुःख न होगा। बाप समझाते हैं मैं इस साधारण बूढ़ तन में कल्प2 प्रवेश करता हूं। यह है भाग्यशाली रथ। सो भी पुराना वानप्रस्त अवस्था है ना। बहुत जन्मों के अन्त में है ना। नाम तो बहुतों की फिराये दिया। इनका नाम ब्रह्मा रख दिया। क्योंकि सन्यास किया है। यह है राजयोग का सन्यास। राजऋषि है ना। भारतवासियों को राजऋषि बनाता हूं। राजयोग सिखाता हूं। समझाना तो बहुत ही सहज है। पुरानी दुनिया तमोप्रधान है। फिर सतो-प्रधान बनाना बाप का ही काम है। शिवरात्रि मनाते भी हैं। फिर उनको पता नहीं पड़ता है। जरूर मनुष्य के ही रथ में आकर नालेज सुनावेंगे ना। कृष्ण तो है ही सतयुग का पहला प्रिन्स। वह पवित्रता सुख शान्ति स्थापन करने नहीं आता। वह तो बाप कहते हैं मैं सर्व की गति सदगति देने आता हूं। बाप कहते हैं मैं तुम बच्चों को शान्ति भी देता हूं तो सुख भी देता हूं। फिर बाकी सभी शान्तिधाम में चले जावेंगे। नई दुनिया को सुखधाम पैराडाईज़ कहा जाता है। यहां तो है दुःखधाम। अनेक प्रकार के दुःख हैं। समझाते तो बहुत अच्छा हैं। यह संगम युग है। एक तरफ हैं कलियुगी, दूसरे तरफ हैं सतयुगी। तो जरूर सतयुग ही स्थापन करूंगा। कलियुग का विनाश होना है। वनियन ट्री का भी मिसाल है। देवता धर्म का कोई है नहीं। बाकी सारा झाड़ खड़ा है। सतयुग है वायसलेस दुनिया। और एक धर्म।

सभी हैं ब्रदर्स। साहब के बच्चे साहबज़ादे। फिर शाहज़ादे बनते हैं। यह तो किसको भी समझाना सहज है ना। सभा में कह सकते हो ना हे आत्माएं तुम सभी ब्रदर्स हो। बाप कहते हैं हम तुम्हारा सुप्रीम फादर तुमको विश्व का मालिक बनाने आया हूं। बाकी सभी शांति धाम चले जावेंगे। यह तो हर 5000वर्ष बाद होता आया है। अच्छा मीठे2 सिकीलधे बच्चों प्रित रूहानी बाप व दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी साहबज़ादों को रूहानी साहब का नमस्ते।

-:* शिव बाबा याद है? *:-